हिन्दी साहित्य और नारी के रूप

संपादक
डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर
डॉ. महांतेश आर अंची

L.V.D. COLLEGE * RAICHUR

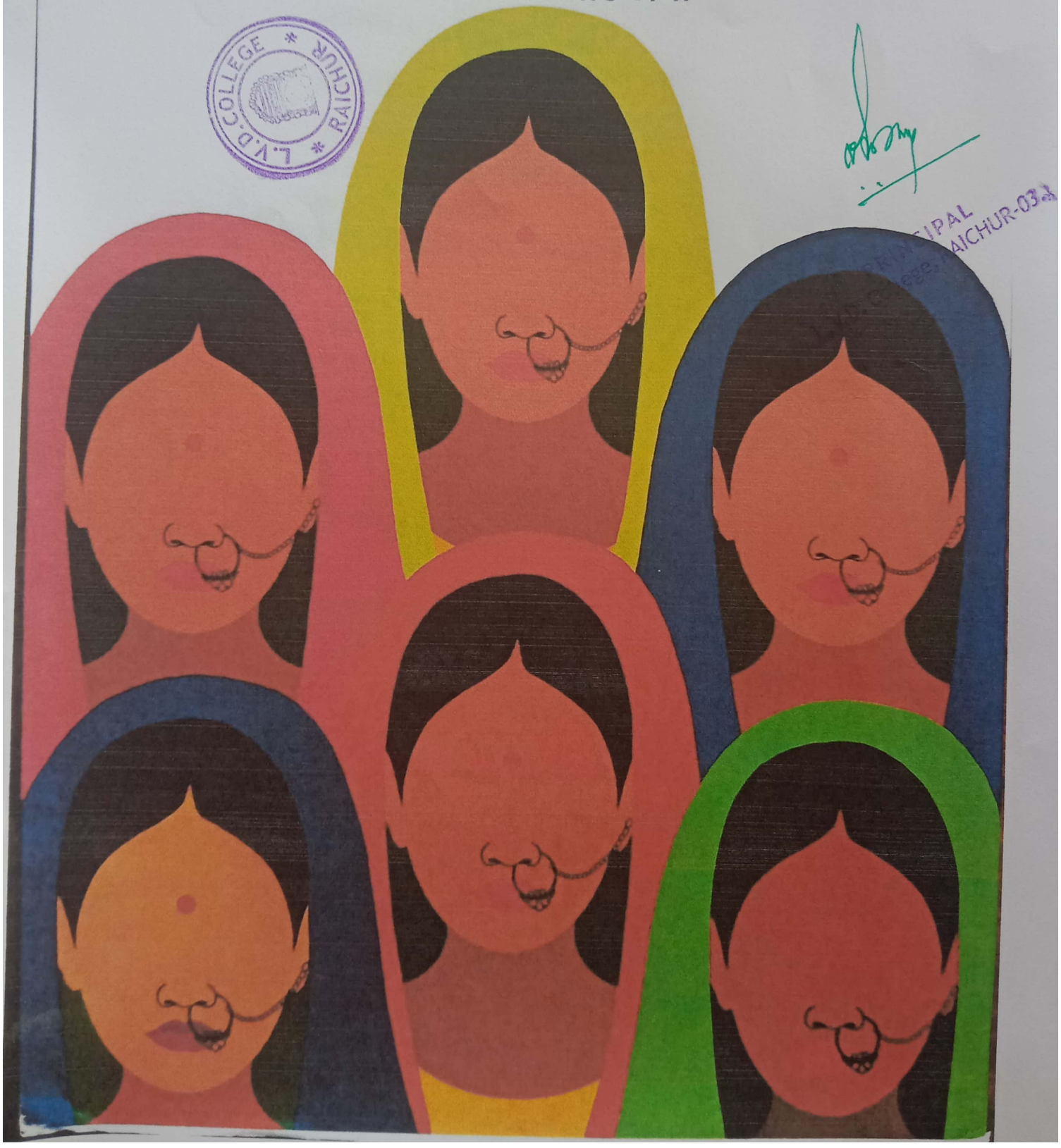

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2021
आवरण चित्र	:	दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© संपादक

ISBN : 978-93-89194-64-7
मूल्य : 375 रुपये

L.V.D. COLLEGE * RAICHUR *

PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-03.

हिन्दी साहित्य और नारी के रूप (आलोचना)-सं. डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर, डॉ. महांतेश आर अंची

Hindi Sahitya Aur Nari Ke Roop (Crticism) Edited by Dr. Anita. M. Belgaonkar, Dr. Mahantesh R Anchi

Scanned with OKEN Scanner

हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में स्त्री. 54
: डॉ. अरुणा
बालिका शिक्षा बढ़ते समाज की बढ़ती जरूरत 61
: हिना तिवारी
निराला की कविताओं में नारी चित्रण 68
: डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी
स्त्री विमर्श 74
: पूनम कुमारी
महिला कहानी लेखन में बदलती नारी की छवि 82
: डॉ. महादेवी प. कणवी
समकालीन हिंदी उपन्यास में नारी प्रतिरोध-कृष्णा सोबती 88
के उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में
: डॉ. हेलन मेरी ए. जे.
कैसे महिला उद्यमी भारतीय समाज को बदल रही हैं 96
: नागेश एन. पी.
इक्कीसवी सदी के हिंदी कविता में नारी 99
: डॉ. सी. एन होम्बाली
स्त्री विमर्श : कल और आज : डॉ. खरटमोल मदन नामदेव 102
आधुनिक नारी और संस्कृति : आचार्य पी. के. जयलक्ष्मी 108
नारी विमर्श(हिन्दी उपन्यास के संदर्भ में) 112
: डॉ. के. शोभा रानी
स्त्री साहित्य(महिला नाट्य लेखन) 117
: डॉ. थामस बाबू
'मित्रो मरजानी' में स्त्री-मन की विविध संवेदनाओं का चित्रण 120
: डॉ. मधु रानी
महिला समाज में सशक्तीकरण की भूमिकाओं का परिदृश्य 125
: बाबुलालभूरा

Scanned with OKEN Scanner

हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में स्त्री

–डॉ. अरूणा

स्त्रीयों को भारतीय समाज में उच्छ स्थान प्राप्त है। स्त्री एवं पुरूष दोनों केतें बंधे सनातन हैं। हमारे देश में गागी, मैत्रेयी, घोषा आदी ऐसी स्त्रियों हुई हैं, जिन्होंने सामज में स्त्री आदर्श प्रस्तुत किया है। इसीलिए मनुस्मृति में कहा गया है-'यह स्त्रियों पूज्यते रमन्से तत्र देवताः। पत्नी पुरूष की अर्धांगी है। उसके बिना पुरूष, धर्म, अर्थ, काम और मोह को प्राप्ति नहीं कर सकता है।समय-समय पर समाज में स्त्रियों का विभिन्न प्रकारेण महत्व रहा है। वह सब होते हुए भी आधुनिक आरत को सर्वाधिक महत्वपूर्ण चर्चित समस्या यदि कोई है, तो वह है स्त्री समस्या। विधवा-विवाह के निषेध ने करोड़ों युवतियों को आत्म-नियंत्रण और आत्मदान के लिए बाध्य कर दिया। यदि इस अग्नि-परीक्षा में वे स्त्री ने उतर सकी और प्रवृत्ति प्रेरणा से उनका पैर कहीं डगमग गया तो उनके जीवन की विषमता और भी बद्र जाती है और उनके सामने वेश्या-वृत्ति या आत्महत्या के अतिरिक्त कोई तीसरा मार्ग नहीं रह जाता। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति आज अत्यन्त दयनीय है। समाज के स्त्री धर्म, नीति-नियम, आधार कमवल स्त्री के लिए हो बने हैं। किन्तु वही कार्य यदि कोई पुरूष करता है तो समाज उस कुछ नहीं कहता। और यदि भूल से भी वह कार्य स्त्री कर बैठे तो कुलटा, पतिता और भी न जाने कितने ही विशेषणों से समाज उसे कलंकित कर देती है।

किसी भी समाज को श्रेष्ठता और अश्रेष्ठता उस समाज में स्त्री की स्थिति पर निर्भर करती है। गांधीजी का भी कहना था कि स्त्री की अबला कहना, उसके प्रति यह पुरूष का अन्याय है। उन्होंने पर्दा प्रथा का विरोध किया या और साथ ही स्त्री

PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-C.

2. हिमांशु जोशी, छाया मत छूना मन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. ऋषभदेव शर्मा, स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम, गीता प्रकाशन, हैदरावाद
4. सुषमा धवन, हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

- डॉ. अरूणा,
विभाग अध्यक्ष,
एल.वी.डी. महाविद्यालय,
रायचूर

Scanned with OKEN Scanner